IOSR Journal of Humanities and Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 30, Issue 6, Series 1 (June, 2025) 81-84
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

प्राचीनभारतीय शैक्षिक परिपाटी पर भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सामाजिक आक्रामकता का अध्ययन

डॉ आभा सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर
एजुकेशन डिपार्टमेंट
जे० एस० हिन्दू पी० जी० कॉलेज अमरोहा

सारांश

यह अध्ययन प्राचीन भारतीय शैक्षिक प्रथाओं के संदर्भ में भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक आक्रामकता के अंतर संबंध पर प्रकाश डालता है। ऐतिहासिक ग्रंथो, दार्शनिक ग्रंथो और पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर अनुसंधान का उद्देश्य, प्राचीन भारत के शैक्षिक परिदृश्य को आकार देने में निभाई गई भावनात्मक बुद्धिमत्ता की भूमिका और शिक्षार्थियों के बीच सामाजिक आक्रामकता को कम करने या बढ़ाने पर, इसके प्रभाव को समझना है। यह अध्ययन समग्र शिक्षा पर प्राचीन भारतीय प्रभाव पर प्रकाश डालता है, जिसमें न केवल बौद्धिक विकास बल्कि भावनात्मक और सामाजिक कौशल का पोषण भी शामिल है। अध्ययन के विश्लेषण में यह प्रयास किया गया है किकैसे शैक्षिक प्रणालियों में नैतिक शिक्षाओं को शामिल किया जाय।भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सामाजिक मनोविज्ञान और ऐतिहासिक शिक्षण प्रथाओं के क्षेत्र में अंतर्दृष्टि को मिलाकर इस अध्ययन का उद्देश्य इस बात की व्यापक समझ में योगदान करना है कि प्राचीन भारतीय शैक्षिकदर्शन ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक आक्रामकता के बीच जटिल अंतर संबंध को कैसे संबोधित किया और क्या आधुनिक शिक्षण प्रथाएं ऐसा कर सकती हैं। अधिक समावेशी और भावनात्मक रूप से संश्लेषितशैक्षिकवातावरण बनाने के लिए इस प्राचीन अंतर्दृष्टि से हमें प्रेरणा लेने की आवश्यकता है।

मुख्य बिंदु– *प्राचीन शिक्षा, वैदिक ज्ञान, किशोरावस्था, आक्रामकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, आत्म जागरूकता, स्व–नियमन*

1.1 प्रस्तावना

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही शिक्षा का बड़ा ही महत्व रहा है। मनुष्य और समाज का आध्यात्मिक और बौद्धिक उत्कर्ष शिक्षा के द्वारा ही संभव हो पता है, यह माना जाता है कि शास्त्र और विवेक से ही शिक्षा संपूर्ण होती है और शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य में ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। यही कारण है कि ज्ञानोदय का आधार तत्व शास्त्र और विवेक के माध्यम से माना गया है।ज्ञान और विद्या के माध्यम से ही मुक्ति की प्राप्ति संभव हो पाती है और मनुष्य कायो में निपुणता को धारण कर पाता है। ज्ञान के आलोक से मनुष्य का जीवन अलौकिक बन जाता है। विद्या मानव को सभ्य और सुसंस्कृत बनाती है। संस्कृत के नीति श्लोक में इन्हें सार्थक बताया गया है, विद्या के माध्यम से ही विनम्रता, विनम्रता से ही योग्यता, योग्यता से धन और आचरण दोनों ही परिष्कृत और स्वीकृत हो जाते हैं।[1] मनुष्य ज्ञान की प्राप्ति कर देव तुल्य हो जाता है। विद्वानों द्वारा बताया गया है कि स्वाध्याय और चेतन का अनुगमन करने से ही मानव में एकाग्रता का विकास होता है, फलस्वरूप वह मानसिक रूप से स्वतंत्र हो जाता है। इससे उसे नित्य ही धन की प्राप्ति होती है, वह अपने मन को एकाग्र करते हुए अपनी इंद्रियों को संयमित कर लेता है, जिससे उसके भीतर यशस्वी तेज उत्पन्न होता है,जो शरीर के भीतर के दिव्यता को विकसित होने में मदद करता है, यही कारण है कि शिक्षा को प्रकाश का स्रोत माना गया है जो विभिन्न क्षेत्रों में जीवन के सच्चे मार्ग को प्रदर्शित करती है।

1.2 शिक्षा का महत्व–

वेदों का प्रसिद्ध सूत्र 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' में इस बात का द्योतक माना जाता है कि मनुष्य आदिकाल से ही अंधकार से प्रकाश यानी अज्ञानता से ज्ञान की ओर उन्मुख होता है। महाभारत में यह भी एक कथन दिया गया है कि विद्या के समान कोई दूसरा नेत्र इस धरती पर नहीं है, ज्ञान के माध्यम से जो प्रकाश हमें प्राप्त होता है,वह ज्ञान मानव में सकारात्मकता को आच्छादित करने में सक्षम होता है।[2] इनके माध्यम से ही व्यक्ति अपने जीवन की वास्तविक कठिनाइयों और समस्याओं को दूर करने में सक्षम हो पाता है। ज्ञान के माध्यम से ही व्यक्ति के भीतर बुद्धि, क्षमता और योग्यता में विकास होता है। विद्या और ज्ञान की प्राप्ति से ही मनुष्य श्रेष्ठ और प्रतिष्ठित हो पाता है। ज्ञान के अभाव में मनुष्य का व्यक्तित्व संकुचित और उसका जीवन बोझिल हो जाता है। अज्ञानता एक अंधकार के समान होती है। अतः अज्ञानी व्यक्ति का जीवन सदैव अंधकार में रहता है, उसके कर्मों की कोई भी महत्व नहीं होता है।[3] छांदोग्य उपनिषद में यह कहा गया है कि अक्षर को जानने अथवा ना जाने वाले दोनों कर्म करते हैं किंतु कर्म विद्या, श्रद्धा, योग संयुक्त होकर ही किया जाता है, वही प्रबलतम होता है, निश्चय ही ज्ञान के अभाव में मनुष्य जीवन और जगत के रहस्य को समझ पाने में असमर्थ रहता है। इसीलिए कहा गया है कि शिक्षा से जो प्रकाश प्राप्त होता है, उस प्रकाश से व्यक्ति के भीतर विवेक का विकास होता है। ऋग्वेद में यह कथन बताया गया है कि यदि कोई व्यक्ति दूसरे से बड़ा है तो इसलिए नहीं कि उसके पास कोई अतिरिक्त नेत्र या हाथ होते हैं बल्कि वह इसलिए बड़ा है कि उसकी बुद्धि और मस्तिष्क, शिक्षा के माध्यम से ही अधिक प्रखर और पूर्ण होते हैं। किसी भी राष्ट्र का आदर्श उसकी शिक्षण संस्थाएं मानी जाती हैं चुकि शिक्षण संस्थाएं राष्ट्र के भविष्य का प्रतिबिंब मानी जाती है। अतःइससे हमें राष्ट्रीय सभ्यता की आत्मा का प्रादुर्भाव मिलता है।[4] प्राचीन काल से यह बात विशेष थी क्योंकि उस काल में उदयमान संस्था को राष्ट्रीय परंपराओं के अनुकूल आचरण करने हेतु प्रोत्साहित किया जाता था। गुरु शिष्य का संबंध प्राचीन काल से ही अत्यंत घनिष्ठ और आदर पूर्ण माना जाता था।

1.3 शैक्षिक दृष्टि से व्यवहार में सकारात्मकता

भावनात्मक बुद्धिमत्ता– व्यक्ति अपनी भावनाओं को सीमित करने और अपने आसपास के लोगों की भावनाओं को समझने की क्षमता रखता है। यह एक ऐसी अवस्था है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने भीतर ऐसे कौशल का विकास करता है जिसके माध्यम से वह अपनी और दूसरों की भावनाओं को समझने और उन्हें सीमित करने का प्रयास करता है।[5] यही भावनात्मक बुद्धिमत्ता कहलाती है। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले लोगों को यह क्षमता होती है कि वह किसी भी व्यक्ति की भावनाओं को समझ सकते हैं और उन्हें प्रभावित कर सकते हैं किंतु दूसरे लोगों की भावनाओं को प्रतिबंधित करना, थोड़ा कठिन होता है। आप यह नियंत्रित नहीं कर सकते कि कोई अन्य व्यक्ति कैसा महसूस करता है अथवा व्यवहार करता है किंतु अगर आप उसके व्यवहार के पीछे की भावनाओं को पहचान सकते हैं तो आप बेहतर समझ पाएंगे कि वे कहां से आ रहे हैं और उनके साथ सर्वोत्तम तरीके से कैसे बातचीत की जाए। उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता, पारंपरिक कौशल के साथ विकसित होती है।[6] विशेष रूप से इसमें संघर्ष प्रबंधन और संचार से जुड़े क्षेत्रों में, कार्यस्थलों में, शैक्षिक क्रियाकलापों में इसका प्रयोग किया जाता है किंतु जो व्यक्ति फिर चाहे वह कर्मचारी हो, विद्यार्थी हो या किसी अन्य क्षेत्र का, अपनी भावनाओं को नियंत्रित नहीं कर सकता, अक्सर आवेग पूर्ण निर्णय ले लेते हैं, जिससे उन्हें असफलताओं का सामना करना पड़ता है। सहानुभूति और समझ के साथ काम करना भावनात्मक बुद्धिमता का एक महत्वपूर्ण भाग है। किसी के व्यवहार को अंतर्निहित भावना से जोड़ने में सक्षम होने से आपको रिश्तो को प्रतिबंधित करने और दूसरों को सुना हुआ महसूस करने में सहायता प्राप्त होती है। व्यक्तिगत स्तर पर अपनी भावनाओं के प्रति जागरूक होना, उन भावनाओं को आप पर नियंत्रण न करने की दिशा में, पहला कदम माना जाता है। आप कैसा महसूस करते हैं और क्यों महसूस करते हैं, इसे पहचानने से आप उन भावनाओं के साथ बैठने और फिर उत्पादक तरीके से आगे बढ़ाने में सक्षम हो पाते हैं। शिक्षित व्यक्ति या विद्यार्थी भावनात्मक रूप से सुदृढ़ होते हैं, कार्य स्थलों में आत्मजागरूक होते हैं और चीजों को निष्पक्ष रूप में देखने में सक्षम होते हैं। यह शिक्षा की ताकत है जो व्यक्ति के भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संप्रेषण करती है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी ताकत और कमजोरी को समझने और विनम्रता के साथ कार्य करने में सक्षम हो पाता है।

आत्म जागरूकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता–

आत्म जागरूकता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता साथ–साथ चलती हैं, हालांकि आत्म जागरूकता मानवीय आतंरिक भावनाओं को जानती हैं, फिर भी वह मानवीय आतंरिक भावनाओंको निर्देशित करने की अनुमति नहीं प्रदान करती हैं किंतु यह निर्णय वही ले सकते हैंजो शिक्षित होते हैं क्योंकि शिक्षित लोग सदैव तर्क को प्राथमिकता देते हैं, भावनाओं को नहीं। इसके अतिरिक्त जब खुद की आलोचनात्मक जांच करने, अपनी ताकत और कमजोरी के बारे में पूरी तरह से जागरूक होने और उनमें सुधार करने के लिए व्यक्ति सक्रिय रूप से सक्षम हो जाता है तो उसमें निडरता का विकास होता है।[7] यह व्यापक रूप से स्वीकार किया गया है कि आत्म जागरूकता, भावनात्मक बुद्धिमत्ता के मूलभूत तत्व है।

स्वनियमन–

स्व–नियमन से तात्पर्य किसी की भावनाओं को नियंत्रित करने के कौशल से है, वे आसानी से अपने विकल्पों पर पूरी तरह विचार किए बिना कभी कार्य नहीं करते हैं। वह कार्य करने से पहले अपने विकल्पों का गहन विश्लेषण करते है। स्व–नियमन तर्क, अनुकूलनशीलता, ईमानदारी जैसी सकारात्मक भावनाओं से अंगीकृत होते हैं। सहानुभूति में दूसरे व्यक्ति की मानसिक और भावनात्मक स्थिति को समझना और साझा करना शामिल होता है, इसमें दूसरों की भावनाओं को अनुभव करने और समझने की क्षमता शामिल है।

उच्च स्तर की सामाजिकता वाले लोग आमतौर पर अपने साथियों का ध्यान और सम्मान अपनी ओर आकर्षित करते हैं। सामाजिक रूप से जागरूक शिक्षित व्यक्ति उत्कृष्ट लोगों को अपने साथ रखने में सक्षम होते हैं, वह सभी के आगे बढ़ने की भावना से विश्लेषित रहते हैं।

1.4मानवीय व्यवहार में नकारात्मकता

आक्रामकता–

आक्रामकता एक ऐसा व्यवहार है जो मानव और पशुओं में समान रूप से पाया जाता है। आक्रामक व्यवहार एक सार्वजनिक घटना है, विद्वानों ने इसे परिभाषित करते हुए बताया है कि आक्रामकता एक अन्य जीवित प्राणी को कष्ट देने अथवा चोट पहुंचाने केलक्ष्य से प्रेरित होकर किया गया, वह व्यवहार है,जिससे दूसरा प्राणी बचने का प्रयास करता है। आक्रामकता दो प्रकार से हो सकती है– संवेगात्मक आक्रामकता और नैमित्तिक आक्रामकता।

जब कोई व्यक्ति गाली देता है तो दूसरा गाली देने वाले व्यक्ति की पिटाई करता है, यह संवेगात्मक आक्रामकता कहलाती है।यदि कोई व्यक्ति अपना अन्य उद्देश्य पूर्ण करने के दृष्टिकोण से किसी दूसरे पर आक्रमण करता है तो इसे नैमित्तिक आक्रामकता कहा जाता है। यह सर्वविदित है कि बालक के आसपास के वातावरण का प्रभाव, उसकी अध्ययन शैली, अध्ययन आदतों और शैक्षिक उपलब्धियां एवं समायोजन पर विशेष रूप से पड़ता है, इसलिए यह निश्चित रूप से आवश्यक हो जाता है कि विद्यार्थियों के आसपास के वातावरण, स्वभाव में आक्रामकता, अध्ययन आदतों, शैक्षिक उपलब्धि एवं समायोजन से संबंधित कर्म का पता लगाया जाए और उन कमियों को दूर करते हुए उचित प्रयास किए जाएं। सामान्य जीवन में देखा गया है कि व्यक्ति परिस्थितियों के अनुसार अलग–अलग स्थितियों में आक्रामक हो जाता है। आक्रामकता एक सीमित मात्रा में कार्य की प्रेरक मानी जाती है किंतु यदि आक्रामकता की मात्रा सामान्य से अधिक हो जाती है तो वह मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार से हानिकारक होती है।[8] अतः यह आवश्यक है कि आक्रामकता प्रबंधन हेतु छोटे–छोटे अभ्यासन के माध्यम से, आक्रामकता की परिस्थितियों का सामना किया जाए क्योंकि आक्रामकता का प्रभाव विद्यार्थियों की समायोजन आदतों और शैक्षिक उपलब्धि पर स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है।

1.5 सामाजिकता के आधार पर शिक्षा का प्रभाव

शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है जो व्यक्ति के जीवन में जीवन पर्यंत चलती रहती है। समान तौर पर किसी भी बालक के सकारात्मक दृष्टिकोण और उसकी शक्तियों के समुचित विकास के लिए प्राचीन काल से ही विद्यालयों की स्थापना होती आ रही है। वर्तमान

समय में भी अभिभावकों के माध्यम से बच्चों से अपेक्षाएं भी बढ़ती जा रही हैं। अभिभावक अच्छे परिणाम के लिए अपने बच्चों को सकारात्मक पारिवारिक वातावरण से दूर भेजते हैं। उनका मानना है कि बाहर का माहौल, उनके पारिवारिक माहौल से बालक की शैक्षिक उपलब्धि, समायोजन और अध्ययन आदतों को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करेगा।[9] अतः प्रत्येक विद्यार्थी के जीवन में पारिवारिक वातावरण और उससे जुड़े क्रियाकलापों का भी प्रभाव पड़ता है। सुसंस्कृत परिवारों से आये विद्यार्थियों में अच्छी आदतें और परंपराएं स्वत ही उत्पन्न होती हैं। वे व्यवहार कुशल, सद्भावना युक्त और उच्च शिक्षण उपलब्धता के साथ, समायोजन की भावनाओं से परिपूर्ण होते हैं किंतु यदि परिवार में विपरीत वातावरण विद्यमान होता है तो विद्यार्थियों में अनेक दोष और बुराइयों का जन्म हो जाता है।[10] कैंडल के अनुसार बालक की बुद्धि पर वंशानुक्रम की अपेक्षा वातावरण का अधिक प्रभाव पड़ता है, जब बालक किशोर अवस्था में आता है तो जो परिवर्तन स्पष्ट होते हैं वह बड़ी तीव्र गति से और विषमता के साथ उसके शरीर और स्वभाव पर अपना प्रभाव डालते हैं। वास्तव में इस अवस्था पर ही व्यक्ति के भविष्य का निर्माण और विनाश दोनों ही निर्भर करता है। किशोरावस्था वह अवस्था होती है, जिसमें वह अपनी भावी जीवन यापन की तैयारी को दिशा देता है।

1.6 निष्कर्ष–यह अध्ययन भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सामाजिक आक्रामकता पर समकालीन चर्चा में प्राचीन भारतीय शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता को रेखांकित करता है। अतीत से प्राप्त अंतर दृष्टि आधुनिक शैक्षिक प्रथाओं को सूचित कर सकती हैं। एकसेअधिक व्यापक दृष्टिकोण को प्रोत्साहित कर सकती हैं जो भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास को शामिल करने के लिए शैक्षणिक उत्कृष्ट से परे होती हैं। इन ऐतिहासिक प्रथाओं से प्रेरणा लेकर शैक्षिक और नीति निर्माता द्वारा समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने की दिशा में काम किया जा सकता है जो न केवल बौद्धिक विकास बल्कि छात्रों की सामाजिक और भावनात्मक कल्याण को भी प्राथमिकता देता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. पांडे आर 2013, प्राचीन भारत के शिक्षा मनीषी शारदा पुस्तक भवन पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर 11 यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद 211002
2. लाल आर बी 2013, भारतीय शिक्षा का विकास और उसकी समस्याएं रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ दिल्ली
3. गुप्ता एस पी तथा अलका गुप्ता 2008, भारतीय शिक्षा का सफरनामा इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर 11यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद
4. दुबे एस शर्तेंदु 2007, प्राचीन भारत में शिक्षा शारदा पुस्तक भवन पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर 11 यूनिवर्सिटी रोड इलाहाबाद
5. अग्निहोत्री आर 2006, आधुनिक शिक्षा की समस्याएं और समाधान राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी जयपुर
6. दिनकर आर सिंह 2015,संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारतीय प्रशासन पहली मंजिल दरबारी बिल्डिंग महात्मा गांधी मार्ग इलाहाबाद
7. अब्दुल्ला ऍम सी इलियास एच मोहिउद्दीन आर और उली जे 2004भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षिक उपलब्ध मलेशिया छात्रों के बीच मानव संसाधन प्रबंधन पेपर्स इस्लामाबाद राष्ट्रीय संस्थान मनोविज्ञान
8. इब्राहिम आर 2000, भावनात्मक संगति और संवेगात्मकता के मध्यस्थ के रूप में कार्य नियंत्रण की भूमिका
9. अल हाशमी ई सुशीला और हाजी आर जहरा 2013, नेतृत्व शैक्षिक स्तर के बीच संबंध, भावनात्मक बुद्धिमत्ता बहरीन में एक केस स्टडी, प्रबंधन इंडियन जनरल आफ मैनेजमेंट 6, 24, 32
10. अयोको ओ बी कैलन वी जे और हर्टेल सी इ जे 2008, संघर्ष पर टीम के भावनात्मक माहौल का प्रभाव और संघर्ष टीम सदस्यों की प्रतिक्रियाएं लघु समूह अनुसंधान 392 121 से 149